Regd. with Registrar of News Papers of India of PUN BIL 2002/07848: Postal Reg.No.GDP-41/2023-2025

मासिक अन्सारुल्लाह क़ादियान

मजिलस अन्सारुल्लाह भारत का तर्जुमान

अगस्त /2023 ई

MONTHLY

ANSARULLAH

QADIAN

August-2023

Magazine of Majlis Ansarullah Bharat

Date of Publication: 10-8-2023

Chairman: Ataul Mujeeb Lone | Editor: Hafiz Syed Rasool Niyaz, Mob: 9876332272 | Manager: Tahir Ahmad Beg, Mob: 9915223313

Annual Subscription: Rs: 250/- | Per Issue: Rs: 25/- | Weight: 50-100 grams/Issue

19-5-2023 को गोडी हाल में आयोजित तरबियती कैंप ज़िला रायचूर (कर्णाटक) की अध्यक्षता करते हुए श्री जावेद अहमद नदीम नाज़िम

19-05-2023 को गोडी हाल में आयोजित तरबियती कैंप ज़िला रायचूर (कर्णाटक) के अवसर पर हाज़िर अंसार सदस्यों का एक दृश्य।

02-06-2023 को आयोजित ब्लड डोनेशन कैंप के बाद हस्पताल के अमला को जमाअत का लिटरेचर पेश करते हुसे फ़ज़्लुर्रहमान फ़ज़ल साहिब ज़ईम अंसारुल्लाह चेन्नई।

16-07-2023 को पटना में आयोजित वार्षिक इज्तिमा मज्लिस अंसारुल्लाह ज़िला अरवाल, आरा, गया, पटना (बिहार) के मौक़ा पर दुआ करवाते हुए श्री शाह महमूद साहिब नाज़िम ज़िला।

25-06-2023 को आयोजित वार्षिक इज्तिमा मज्लिस अंसारुल्लाह ज़िला कालीकट (केरला) के अवसर पर एक मुक़ाबिले का दृश्य।

18-06-2023 को आयोजित वार्षिक इज्तिमा मज्लिस अंसारुल्लाह ज़िला एर्नाकुलम (केरला) में हाज़िर अंसार सदस्यों का एक दृश्य ।

25-06-2023 को आयोजित वार्षिक इज्तिमा मज्लिस अंसारुल्लाह ज़िला यादगीर,रायचूर,गलुबर्गा (कर्णाटक) में हाज़िर अंसार सदस्यों का एक दृश्य।

9-07-2023 को आयोजित वार्षिक इज्तिमा मज्लिस अंसारुल्लाह ज़िला कुलगाम ज़ोन बी (कश्मीर) में हाज़िर अंसार सदस्यों का एक दृश्य।

18-06-2023 को आयोजित वार्षिक इज्तिमा मज्लिस अंसारुल्लाह ज़िला राजोरी (जम्मू कश्मीर) के स्टेज पर श्री मुहम्मद आरिफ रब्बानी साहिब क़ाइद तालीम, श्री मुख्तार अहमद नाज़िम ज़िला मौजूद हैं।

02-07-2023 को आयोजित वार्षिक इज्तिमा मज्लिस अंसारुल्लाह ज़िला महबूबनगर (तेलंगाना) में हाज़िर अंसार सदस्यों का एक दृश्य।

بسم اللہ الرحمن الرحیم   نحمدہ ونصلی علی رسولہ الکریم   وعلی عبدہ المسیح الموعود

یٰۤاَیُّهَا الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا كُوْنُوْۤا اَنْصَارَ اللّٰهِ
سورۃ الصف آیت ۱۵

निगरान
अताउल मुजीब लोन
सम्पादक
सय्यद रसूल नियाज़
उप-सम्पादक (हिन्दी)
डाक्टर अब्दुल माजिद
09915279005
मैनेजर
ताहिर अहमद बेग
Ph. +91 99152 23313
प्रेस
फ़ज़्ले उमर प्रिंटिंग प्रेस
क़ादियान
वार्षिक मूल्य : 250 ₹
विदेश : 50 अमरीकी डॉलर
प्रकाशन स्थान
ऐवाने अन्सार, भारत
क़ादियान - 143516
ज़िला : गुरदासपुर, पंजाब
फोन : 01872-220186
फैक्स : 01872-224186

मज्लिस अन्सारुल्लाह भारत का प्रवक्ता

मासिक पत्रिका

अन्सारुल्लाह

क़ादियान

Volume - 21   **अगस्त 2023**   **Issue - 07**

विषय सुचि	पृष्ठ
दर्सुल क़ुर्आन	2
दर्सुल हदीस	2
हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के उपदेश	3
सम्पादकीय : एक तकलीफ़ और दर्द से तब्लीग़ की जाए	4
निवेदन - सदर मज्लिस अंसारुल्लाह भारत आसमां पर दावत-ए-हक़्क़ के लिए इक जोश है	6
लेख : क़ुरआन शरीफ़ जीवनयापन का एक पूर्ण संविधान है भाग -2 लेखक : दिलावर खान साहिब	8

Printed & Published by Shoaib Ahmad M.A. and owned by Majlis Ansarullah Bharat Qadian and Printed at Fazle Umar Printing Press, Harchowal Road, Qadian Distt. Gurdaspur 143516, Punjab, INDIA and Published at Office Majlis Ansarullah Bharat, P.o. Qadian, Distt. Gurdaspur 143516 Punjab India. Editor Syed Rasool Niyaz

قرآن کریم दर्सुल क़ुर्आन

وَمَنْ اَحْسَنُ قَوْلًا مِّمَّنْ دَعَآ اِلَى اللّٰهِ وَعَمِلَ صَالِحًا وَّقَالَ اِنَّنِیْ مِنَ الْمُسْلِمِیْنَ وَلَا تَسْتَوِی الْحَسَنَةُ وَلَا السَّیِّئَةُ اِدْفَعْ بِالَّتِیْ هِیَ اَحْسَنُ فَاِذَا الَّذِیْ بَیْنَكَ وَبَیْنَهٗ عَدَاوَةٌ كَاَنَّهٗ وَلِیٌّ حَمِیْمٌ۔

और बात कहने में उस से उत्तम कौन हो सकता है जो अल्लाह की ओर बुलाए और नेककर्म करे और कहे कि मैं निस्संदेह पूर्ण आज्ञाकारियों में से हूँ। न अच्छाई बुराई के बराबर हो सकती है और न बुराई अच्छाई के (बराबर)। ऐसी चीज़ से बचाओ कर कि जो उत्तम हो। तब ऐसा व्यक्ति जिसके और तेरे मध्य शत्रुता थी वह मानो अचानक एक जान देने वाला मित्र बन जाएगा।

दर्सुल हदीस

عَنْ اَبِیْ هُرَیْرَةَ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ اَنَّ رَسُوْلَ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّمَ قَالَ مَنْ دَعَا اِلٰى هُدًى كَانَ لَهٗ مِنَ الْاَجْرِ مِثْلُ اُجُوْرِ مَنْ تَبِعَهٗ لَا یَنْقُصُ ذٰلِكَ مِنْ اُجُوْرِهِمْ شَیْئًا وَمَنْ دَعَا اِلٰى ضَلَالَةٍ كَانَ عَلَیْهِ مِنَ الْاِثْمِ مِثْلُ اٰثَامِ مَنْ تَبِعَهٗ لَا یَنْقُصُ ذٰلِكَ مِنْ اٰثَامِهِمْ شَیْئًا۔(مسلم كِتَاب الْعِلْمِ۔باب مَنْ سَنَّ سُنَّةً حَسَنَةً أَوْ سَیِّئَةً وَمَنْ دَعَا إِلٰى هُدًى أَوْ ضَلَالَةٍ)

अनुवाद - हज़रत अबू हुरैरा[रज़ि] से रिवायत है कि रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया: जिस व्यक्ति ने हिदायत की दावत दी उसे इस हिदायत का अनुसरण करने वालों के अज्र के बराबर अज्र मिलेगा और उन के अज्र में कोई कमी नहीं होगी और जिस व्यक्ति ने किसी गुमराही की हिदायत दी, उस पर इस का अनुसरण करने वालों के बराबर गुनाह (का बोझ) होगा और उन के गुनाहों में कोई कमी नहीं होगी।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के दिव्य उपदेश

"तब्लीग़ सिलसिला के लिए निस्पृह व्यक्तियों की ज़रूरत"

"हमें ऐसे लोगों की ज़रूरत है जो न केवल मौखिक रूप से बल्कि कुछ करके भी दिखाने वाले हों। ज्ञान का मौखिक दावा निरर्थक है। जो लोग अहंकार और अहं से पूरी तरह मुक्त हैं और हमारे साथ रहकर या कम से कम हमारी पुस्तकों का बार-बार अध्ययन करते हों, उनका ज्ञान उत्तम स्तर पर पहुंच गया हो। अत: शेख ग़ुलाम अहमद इस के लिए एक अच्छे व्यक्ति मालूम होते हैं। उनकी बातें असरदार भी हैं और इतनी ईमानदारी और प्रेम से इतनी भीषण गर्मी में भी उन्होंने इतनी दूर-दूर तक भ्रमण करने का भार उठाया है। कुछ सर्वशक्तिमान ख़ुदा की युक्ति है कि लोग उसकी बातें सुनने के लिए एकत्रित होते हैं। एक जगह तो उस पर पत्थर भी पड़े, लेकिन सर्वशक्तिमान ख़ुदा की शक्ति से वे पत्थर उनको लगने की बजाए दूसरे को लगा और वह घायल हो गया।

तबलीग़ के लिए ऐसे पुरुषों के आने की आवश्यकता तो है ही, परंतु ऐसे योग्य पुरुष भी मिलने चाहिए जो इस प्रकार अपना जीवन समर्पित कर सकें। पैगम्बर ख़ुदा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथी भी इस्लाम के प्रचार-प्रसार के लिए दूर देशों की यात्रा करते थे। यह जो चीन के देश में कई करोड़ मुसलमान हैं। इससे मालूम होता है कि साहबा रिज़्वानुल्लाह में से भी कोई वहाँ पहुँचा होगा।

यदि बीस या तीस व्यक्ति इसी प्रकार अलग-अलग स्थानों पर जाएं तो तबलीग़ बहुत जल्दी हो सकती है, परंतु जब तक ऐसे लोग हमारे उद्देश्य के अनुरूप न हों और किनाअत शिआर (निस्पृह) न हों तब तक हम उन्हें पूरे-पूरे अधिकार नहीं दे सकते। पैगंबर ख़ुदा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सहाबा इतने निस्पृह और पराक्रमी थे कि कभी-कभी वे पेड़ों की पत्तियों पर ही गुज़र करते थे।

पूरा भारत हमारे दावों से इतना अनजान है कि ऐसा लगता है जैसे किसी को पता ही नहीं। मेरे हिसाब से मदरसे या कॉलेज आदि का निर्माण सिलसिले की मज़बूती पर निर्भर है। जब सिलसिले की ज़रूरतें जैसे लंगर आदि होती हैं, पूर्ति नहीं होने पर बाक़ी कामों पर अधिक ध्यान देना बेकार है। यदि ऐसे योग्य व्यक्ति सिलसिले की सेवा के लिए निकाल जाएँ जो केवल लोगों को इस सिलसिले की खबर ही पहुंचा दें तो भी बहुत बड़े लाभ की उम्मीद की जा सकती है। (मल्फ़ूज़ात, खंड 5, पृष्ठ 682, 23 मई, 1908)

सम्पादकीय "एक तकलीफ़ और दर्द से तब्लीग़ की जाए"

अल्लाह तआला ने क़ुरआन मजीद में न केवल दावत इलल्लाह या इस्लाम की तब्लीग़ की ज़रूरत और महत्व को विभिन्न स्थानों पर बयान फ़रमाया है बल्कि उस के उसूल और शराइत को भी उजागर किया है। ताकि बनीनौ इन्सान को ख़ालिक़ हक़ीक़ी की तरफ़ लाने में मुमिनीन को कामयाबी हासिल हो। इन शराइत में एक अहम और ज़रूरी शर्त दर्द-ए-दिल के साथ इंतिहाई हमदर्दी के साथ लोगों को तौहीद का पैग़ाम देना है। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की इसी कैफ़ीयत का इज़हार करते हुए ख़ुद अल्लाह तआला क़ुरआन-ए-करीम में फ़रमाता है :

لَعَلَّكَ بَاخِعٌ نَّفْسَكَ اَلَّا يَكُوْنُوْا مُؤْمِنِيْنَ (अशशोअरा -:4) तर्जुमा: क्या तू अपनी जान को इस लिए हलाक कर देगा कि वे मोमिन नहीं होते।

इस आयत की तफ़सीर में हज़रत मुस्लेह मौऊदरज़ि फ़रमाते हैं:-

"रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की इस बेमिसाल शफ़क़त और मुहब्बत का ज़िक्र किया गया है जो आप को बनीनौ इन्सान से थी और बताया गया है कि आप उनकी हिदायत के लिए रात और दिन इस क़दर जिहाद फ़रमाते और इतनी दुआएं करते थे कि क़रीब था कि आप इस ग़म से अपने आपको हलाक कर लेते। आपको न अपने खाने की परवाह थी न पीने की परवाह थी। न नींद और आराम की परवाह थी। आप लोगों को हलाकत के गढ़ों से बचाने और उन्हें नजात और सलामती का राह दिखाने के लिए रातों को उठ उठकर अल्लाह तआला के हुज़ूर गिड़गिड़ाया करते और इतनी इतनी देर खड़े रहते कि आपके पांव सूज जाते ...रसूल करीमस.अ.व. की ये इमतियाज़ी ख़ुसूसीयत जो अल्लाह तआला ने इस आयत में बयान फ़रमाई है इस में मोमिनों के लिए भी बड़ा भारी सबक़ है और उन्हें तवज्जा दिलाई गई है कि अगर तुम तरक़्क़ी करना चाहते हो तो अपनी क़ुर्बानीयों को इस हद तक पहुँचाओ कि दुश्मन की नज़र में तो वह सरीह ख़ुदकुशी हो। मगर तुम जानते हो कि वह ख़ुदकुशी नहीं बल्कि इसी में तुम्हारी अबदी हयात का राज़ है।" (तफ़सीर कबीर जल्द 9 सफ़ा 321 से 322 इशाअत 2023)

अपने दिल में मोजज़िन तब्लीग़ी जोश का ज़िक्र करते हुए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं: "हमारे इख़तियार में हो तो हम फ़क़ीरों की तरह घर-घर फिर कर ख़ुदा तआला के सच्चे दीन की इशाअत करें और इस हलाक करने वाले शिर्क और कुफ़्र से जो दुनिया में फैला हुआ है लोगों को बचा लें। अगर ख़ुदा तआला हमें अंग्रेज़ी ज़बान सिखा दे तो हम ख़ुद फिर कर और दौरा कर के तब्लीग़ करें और इसी तब्लीग़ में ज़िंदगी ख़त्म कर दें ख़ाह मारे ही जावें।"(मलफ़ूज़ात जिल्द 2 सफ़ा 219)

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अलख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने एक मौक़ा पर हमें तब्लीग़ के तरीका-ए-कार और एहमीयत को बयान करते हुए फ़रमाया :-

"दावत इलल्लाह करें। हिक्मत से करें, एक तसलसुल से करें, मुस्तक़िल मिज़ाजी से करें, और ठंडे मिज़ाज के साथ, मुस्तक़िल मिज़ाजी के साथ करते चले जाएं। दूसरे के जज़बात का भी ख़्याल रखें और दलील के लिए हमेशा

क़ुरआन-ए-करीम और हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की किताबों से हवाले निकालें। फिर हर इलम, अक़्ल और तबक़े के आदमी के लिए उस के मुताबिक़ बात करें। ख़ुदा के नाम पर जब आप नेक नीयती से बात कर रहे होंगे तो अगले के भी जज़बात और होते हैं। नेक नीयती से अल्लाह तआला के नाम पर की गई बात असर करती है। एक तकलीफ़ से एक दर्द से जब बात की जाती है तो वह असर करती है। तमाम अंबिया भी इसी उसूल के तहत अपने पैग़ाम पहुंचाते रहे। और हर एक ने अपनी क़ौम को यही कहा है कि मैं तुम्हें अल्लाह की तरफ़ बुलाता हूँ, नेक बातों की तरफ़ बुलाता हूँ और इस पर कोई अज्र नहीं मांगता। यही हमें क़ुरआन-ए-करीम से पता लगता है। अल्लाह तआला फ़रमाता है कि अगर तुम इंतिहाई मेहनत, इंतिहाई हिम्मत और तमामतर सलाहीयतों के साथ अल्लाह तआला से दुआ मांगते हुए ये काम करोगे तो अल्लाह तआला नेक फ़ितरतों को तुम्हारे साथ मिलाता चला जाएगा। इंशाअल्लाह (ख़ुतबा जुमा 8 अक्तूबर 2004)

दुआ है कि अल्लाह तआला हमें एक दिली तड़प और हमदर्दी के साथ इस्लाम का पुरअमन पैग़ाम सारी दुनिया में फैलाने की तौफ़ीक़ दे।

(सय्यद रसूल नियाज़)

INDIAN AUTO

हर प्रकार की मोटर गाड़ियों के पार्टस सस्ते रेट पर खरीदें।

P. Ali Koya

CALICUT (KERALA)

"शिक्षा प्राप्त करना हर मुस्लिम पुरुष एवं स्त्री का कर्त्तव्य है"

MUSTAFA BOOK CO

All kinds of Academic Book of Kerala Board, CBSE, ISCS & Universities

Fort Road

KANNUR-1 (KERALA)

Mobile : 09895655426

SONET SOLUTIONS

PRIVATE LIMITED

No.41, II Cross, Doctors Layout,
Kasturi Nagar,
BANGALORE - 560043

तालिबे दुआ :

MUSADDIQ AHMAD

Mobile : 098451-98560

Tel : +91 (80) 41636612

Web : www.sonetsolutions.in

निवेदन सदर-ए-मज्लिस

आसमां पर दावत-ए-हक़ के लिए इक जोश है

अताउल मुजीब लोन, सदर मज्लिस अन्सारुल्लाह भारत

दावत इलल्लाह एक पवित्र कर्तव्य है। जो एक तरफ़ हमारी तालीम और तर्बीयत के लिए निहायत मुफ़ीद है तो दूसरी तरफ़ क़ियाम तौहीद और ग़लबा इस्लाम के लिए इंतिहाई ज़रूरी है। इसी लिए क़ुरआन-ए-करीम में अमर बिलमारुफ़ और नही अनिल मुनकर के साथ-साथ दावत इलल्लाह पर भी बहुत ज़ोर दिया गया है। इस ज़माना में अल्लाह तआला ने आँहज़रत सल्ल-ल्लाहोअलैहि वसल्लम के गुलाम-ए-सादिक़ हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को इस्लाम की तकमील इशाअत-ए-हिदायत के लिए मबऊस फ़रमाया है। और इस के लिए तमाम वसाइल को जमा कर दिया है। चुनांचे हज़रत मसीह मौऊद अलैहि अस्सलाम फ़रमाते हैं:-

''ख़ुदा तआला ने तब्लीग़ के सारे सामान जमा कर दिए हैं चुनांचे मतबा के सामान, काग़ज़ की कसरत, डाकख़ानों, तार, रेल, और दुखानी जहाज़ों के ज़रीया सारी दुनिया एक शहर का हुक्म रखती है और फिर नित-नई ईजादें इस जमा को और भी बढ़ा रही हैं क्योंकि अस्बाब तब्लीग़ जमा हो रहे हैं अब फ़ोनो ग्राफ़ से भी तब्लीग़ का काम ले सकते हैं और इस से बहुत अजीब काम निकलता है अख़बारों और रिसालों का इजरा ग़रज़ इस क़दर सामान तब्लीग़ जमा हुए हैं कि इस की नज़ीर किसी पहले ज़माना में हमको नहीं मिलती बल्कि रसूल अल्लाह सल्ल-ल्लाहो अलैहि वसल्लम की बिअसत के अग़राज़ में से एक तकमील दीन भी थी। जिसके बारे में फ़रमाया गया था اَلْيَوْمَ اَكْمَلْتُ لَكُمْ دِيْنَكُمْ وَاَتْمَمْتُ عَلَيْكُمْ نِعْمَتِيْ (अलमाय-दा:4) अब इस तकमील में दो खूबियां थी एक तकमील हिदायत और दूसरी तकमील इशाअत हिदायत। तकमील हिदायत का ज़माना तो आँ-हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का अपना पहला ज़माना था और तकमील इशाअत हिदायत का ज़माना आप का दूसरा ज़माना है जबकि آخرين منهم لما يلحقوا بهم (अलजुमा:4) का वक़्त आने वाला है और वो वक़्त अब है यानी मेरा ज़माना यानी मसीह मौऊद का ज़माना .. फिर ये भी वाअदा है कि सारे अदयान को जमा किया जाएगा और एक दीन को ग़ालिब किया जाएगा ये भी मसीह मौऊद के वक़्त की एक जमा है क्योंकि ليظهره على الدين كله (अस्सफ़:10) मुफ़स्सिरों ने मान लिया है मसीह मौऊद ही के वक़्त होगा।''

(मलफ़ूज़ात जिल्द 2 सफ़ा 49 ता 50)

अब तो ऐसे अज़ीमुश्शान ईजादात हमें दस्त-याब हैं कि बहुत कम ख़र्च में घर बैठे हम सारी दुनिया में तब्लीग़ के फ़राइज़ अदा कर सकते हैं। दरअसल ग़लबा इस्लाम और इन्क़िलाब का वक़्त क़रीब से क़रीब-तर है। ग़ाफ़िल मुजरिम कहलाने का वक़्त आ गया है। हज़रत ख़लीफ़ तुल मसीह राबे रहिमाहुल्लाह फ़रमाते हैं :

"वह अहमदी जो अभी तक दावत इलल्लाह के काम से ग़ाफ़िल हैं इन को मैं बताता हूँ कि अब तो ये हालत है कि वो मुजरिम बनते चले जा रहे हैं। ख़ुदा की तक़दीर उन लोगों को क़रीब लाने का इंतिज़ाम कर रही है।.. अल्लाह तआला ने वो हवाएं चला दी हैं जिनके नतीजा में इस्लामी इन्क़िलाब क़रीब आ रहा है दिल दीन हक़ की तरफ़ माएल हो रहे हैं।..इस लिए मैं बर्र-ए-आज़म यूरोप और अमरीका में बसने वाली जमातों की बिलख़सूस और बाक़ी जमातों को बिलउमूम याद करवाना चाहता हूँ कि वह हवा चल पड़ी है जिसके नतीजा अल्लाह तआला के फ़ज़ल से दीन हक़ को बिलआख़िर दुनिया पर ग़लबा नसीब होता है इस लिए दावत-ए-इलल्लाह के काम में आपकी इंतिहाई जद्द-ओ-जहद कोशिश और दिलचस्पी की ज़रूत है।"

(ख़ुतबा जुमा 25 नवंबर 1987)

आसमां पर दावत-ए-हक़ के लिए इक जोश है
हो रहा है नेक तबओं पर फ़रिश्तों का उतार
(दुर्रे समीन)

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अलख़ामिस अय्य-दहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ फ़रमाते हैं: "अल्लाह तआला ने आज-कल हमें तब्लीग़ की बहुत सी सहूलतें मुहय्या फ़र्मा दी हैं... उनसे हर अहमदी फ़ायदा उठा सकता है। सिर्फ अपनी तर्जीहात बदलने की ज़रूत है ताकि दुनिया को सही रास्ते की तरफ़ रहनुमाई करके हम में से हर एक अल्लाह तआला के फ़ज़लों को हासिल करने वाला बन सके। दुनिया को तबाही के गढ़े में गिरने से बचाने वाला बन सके।"(इख़तता-मी ख़िताब जलसा सालाना जर्मनी 2015 दावत इलल्लाह की एहमीयत और ज़रूरत: सफ़ा 25) अल्लाह तआला हमें इन हिदायात पर अमल करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए। आमीन

(अताउल मुजीब लोन)

सदर मज्लिस अन्सारुल्लाह भारत

Mobile : 9572858090, 9955553631

NEW MOBILE POINT

TABASSUM FANCY STORE

Mosabi Market No. 3, East Singhbhum
JHARKHAND Pin - 832104

Mob: 9008510546

Akmal Tailor

Hill Road, Madikeri - 571201

Pants, Shirts & All Gents Wears Stitching Here

क़ुरआन शरीफ़ जीवनयापन का एक पूर्ण संविधान है

दिलावर खान, खादिम नज़ारत इस्लाह व इरशाद मर्कज़िया क़ादियान

शेष भाग.....हज़रत अबू बकर[रज़ि] ने अपने ज़माना ख़िलाफ़त में हज़रत ज़ैद बिन साबित से जो कातिब वह्यी थे, इस लिखे हुए क़ुरआन की जुज़ बंदी करवा कर उसे एक सहीफ़ा की शक्ल में महफ़ूज़ किया। बिलआख़िर हज़रत उस्मान ने अपने दौर ख़िलाफ़त में इस सहीफ़ा इलाही की चंद नक़लें करवा कर एक एक कापी इस्लामी देशों में भिजवाई और इस तरह क़ुरआन-ए-करीम को दुनिया में फैलाया। आज क़ुरआन-ए-करीम उसी सूरत में हमारे सामने है। (दीबाचा तफ़सीरुल क़ुरआन सफ़ा 257)

एहमीयत क़ुरआन: इरशाद रब्बानी है

يَاأَيُّهَا النَّاسُ قَدْ جَآءَتْكُمْ مَّوْعِظَةٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ وَشِفَآءٌ لِّمَا فِي الصُّدُوْرِ- وَهُدًى وَّرَحْمَةٌ لِّلْمُؤْمِنِيْنَ-

(सूरत यूनुस) तर्जुमा: ए लोगो तुम्हारे पास तुम्हारे रब की तरफ़ से यक़ीनन एक ऐसी किताब (क़ुरआन) आ गई है जो सरासर नसीहत है और वो हर बीमारी के लिए जो सीनों में पाई जाती हो शिफ़ा देने वाली है। और ईमान लाने वालों के लिए हिदायत और रहमत है।

وَقُرْاٰنَ الْفَجْرِ- اِنَّ قُرْاٰنَ الْفَجْرِ كَانَ مَشْهُوْدًا-(सूरत बनी इस्राईल) तर्जुमा : और सुबह के वक़्त (क़ुरआन) के पढ़ने को भी (लाज़िम समझ) सुबह के वक़्त क़ुरआन का पढ़ना यक़ीनन (अल्लाह के हुज़ूर) में एक मक़बूल अमल है।

وَرَتِّلِ الْقُرْاٰنَ تَرْتِيْلًا- (सूरत अलमुज़म्मिल)तर्जुमा: और क़ुरआन को ख़ुश इल्हानी से पढ़।

وَاِذَا قُرِئَ الْقُرْاٰنُ فَاسْتَمِعُوْا لَهٗ وَاَنْصِتُوْا لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُوْنَ-(अलाअराफ़) तर्जुमा: और ए लोगो जब क़ुरआन पढ़ा जाये तो इस को सुना करो और चुप रहा करो ताकि तुम पर रहम किया जाये।

बरकात क़ुरआन अज़ इरशाद-ए-नबवी:

خَيْرُكُمْ مَنْ تَعَلَّمَ الْقُرْاٰنَ وَعَلَّمَهٗ(बुख़ारी)तर्जुमा : तुम में से बेहतर वो शख़्स है जो क़ुरआन सीखे और सिखाए।

مَنْ قَرَئَ حَرْفًا مِنْ كِتَابِ اللّٰهِ فَلَهٗ بِهٖ حَسَنَةٌ* وَالْحَسَنَةُ بِعَشْرِ اَمْثَالِهَا- (तिरमिज़ी)

तर्जुमा : जिसने किताबुल्लाह का एक हर्फ़ पढ़ा उसने एक नेकी और हर नेकी का अज्र दस गुना है।

*फ़रमाया: क़ुरआन-ए-करीम पढ़ाओ और इस लिए कि क़ियामत के दिन क़ुरआन पढ़ने वाले या पढ़ाने वाले के लिए ये शफ़ी बन कर आएगा। (मुस्लिम)

....जो आदमी क़ुरआन-ए-करीम पढ़ता है और इस की तिलावत में माहिर है वो क़ियामत के रोज़ फ़र्मांबरदार मुअज़्ज़िज़ फ़रिश्तों के साथ होगा। और जो शख़्स क़ुरआन-ए-करीम पढ़ता है और इस का पढ़ना इस पर दुशवार है और इस के लिए दुगुना सवाब होगा। (बुख़ारी)

अज़मत क़ुरआन: हज़रत बानी सिलसिला अहमदिया मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमदिया कादियानी मसीह मौऊद-ओ-महदी माहूद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं

"जो शख़्स क़ुरआन के सात सौ हुक्मों में से एक छोटे से हुक्म को भी टालता है। वो नजात का दरवाज़ा अपने हाथ से अपने पर बंद करता है।"

"ख़ुदा ने मुझे इस लिए भेजा है कि ताकी मैं इस बात का सबूत दूं कि ज़िंदा किताब क़ुरआन है।"

"मैं बार-बार और बुलंद आवाज़ से कहता हूँ कि क़ुरआन और रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से सच्ची मुहब्बत रखना और सच्ची ताबेदारी इख़्तियार करना इन्सान को साहब-ए-करामात बना देता है।"

"क़ुरआन शरीफ़ में ये एक बरकत है कि इस से इन्सान का ज़हन साफ़ होता और ज़बान खुल जाती है।"

"क़ुरआन शरीफ़ की तिलावत की असल ग़रज़ तो यह है कि इस के हक़ायक़ और मआरिफ़ पर इत्तिला मिले और इन्सान अपने अंदर एक तबदीली पैदा करे।"

"याद रखो! क़ुरआन शरीफ़ एक अजीब-ओ-ग़रीब और सच्चा फ़लसफ़ा है इस में एक निज़ाम है जिसकी क़दर नहीं की जाती। जब तक निज़ाम और तर्तीब क़ुरआन को

मद्दनज़र न रखा जाए और इस पर ग़ौर न किया जाए क़ुरआन शरीफ़ की तिलावत के अग़राज़ पूरे न होंगे।"

"ख़ुश इल्हानी से क़ुरआन-ए-करीम पढ़ना भी इबादत है इन्सान को चाहिए कि क़ुरआन शरीफ़ कसरत से पढ़े जब इस में दुआ का मुक़ाम आवे तो दुआ करे और ख़ुद भी ख़ुदा से वही चाहे जो इस दुआ में चाहा गया है।"(रुहानी ख़ज़ाइन)

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अव्वल का इशक़ क़ुरआन :

"ख़ुदा तआला जो मुझे बहिश्त में और हश्र में नेअमतें दे तो मैं सबसे पहले क़ुरआन शरीफ़ माँगूँ और तलब करूँ ताकि हश्र के मैदान में भी और बहिश्त में भी क़ुरआन शरीफ़ पढ़ूं, पढ़ाऊं, सुनाऊँ।"(तज़किरतुमहदी)

क़ुरआन किस तरह पढ़ना चाहिए:

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सानी फ़रमाते हैं:"इन्सान रोज़ाना पढ़ने के लिए क़ुरआन-ए-करीम का एक हिस्सा मुक़र्रर कर ले कि इतना हर-रोज़ पढ़ा करूँगा। इस को रोज़ाना पढ़ा जाये और इस को पूरा करने में कोताही न की जाये रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम फ़रमाते हैं कि ख़ुदा तआला को सबसे ज़्यादा वो इबादत पसंद है जिस पर इन्सान दवाम इख़तियार करे और नाग़ा न होने दे।"

नीज़ फ़रमाया:"इन्सान सारे कलाम को पढ़े और बार-बार पढ़े ये नहीं कि कोई ख़ास हिस्सा चुन लिया और उसे पढ़ना शुरू कर दिया। दोम: इस वक़्त पढ़े जब उस के दिल में मुहब्बत और इख़लास का जोश हो... वो सुबह और शाम के वक़्त तिलावत के लिए मुक़र्रर करे। सोम: क़ुरआन-ए-करीम इस यक़ीन के साथ पढ़ा जाये कि इस के अंदर ग़ैर महिदूद ख़ज़ाना है जो शख़्स ये यक़ीन रखता है कि इस में खज़ाने मौजूद हैं वो उस के मआरिफ़ और उलूम को हासिल करने में कामयाब हो जाता है।"(ज़िक्र इलाही)

क़ुरआन-ए-करीम को हिज़्र-ए-जान बनाएँ

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सालिस का आदेश है:

"सिर्फ अहमदी कहलाना या बैअत कर लेना काफ़ी नहीं बल्कि आपका फ़र्ज़ है कि क़ुरआन-ए-करीम की और इस्लाम की दुनिया में इज़्ज़त क़ायम करें और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के नाम को बुलंद करने वाले हों लेकिन यह काम हरगिज़ न हो सकेगा जब तक कि दिल में क़ुरआन की मुहब्बत न हो जब तक कि क़ुरान-ए-पाक का इलम आपको हासिल न हो जब तक कि आप इस कमाहकह समझने वाले न हों और जब तक कि हमेशा उस के मुताल्लिक़ ग़ौर-ओ-फ़िक्र करने वाले न हों अत: अगर आपने अपनी ज़िंदगी का मक़सद हासिल करना है तो ज़रूरी है कि आप क़ुरआन-ए-करीम से प्यार करने वाले हों। इस तरह कि इस के तमाम अहकाम पर अमल करने वाले हों। क़ुरआन-ए-करीम की इज़्ज़त करने वाले हों। क़ुरआन-ए-करीम के नूर से ख़ुद भी मुनव्वर हों और फिर उस नूर की दुनिया में इशाअत भी करें।"(अनवार करानी)

"मेरे दिल में यह ख़ाहिश शिद्दत से पैदा की गई है कि क़ुरआन-ए-करीम की इबतिदाई सतरह आयतें.... हर अहमदी को याद होनी चाहिऐं और जिस हद तक मुम्किन हो उनकी तफ़सीर भी आनी चाहिए और फिर दिमाग़ में याद रहनी चाहिए। उम्मीद है कि आप मेरी रूह की गहराई से पैदा होने वाले इस मुतालिबा पर लब्बैक कहते हुए इन आयतों को ज़बानी याद करने का एहतिमाम करेंगे सतरह आयात को अज़बर कर लेंगे।"

ख़ुदा तआला का मुतालिबा

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह राबे रहिमहुल्लाह फ़रमाते हैं:"क़ुरआन-ए-करीम पढ़ना कोई मामूली सी बात नहीं। क़ुरआन-ए-करीम को समझना पहले उस की तिलावत करना फिर उसे समझ कर इस पैग़ाम को दुनिया-भर तक पहुंचाना एक अहमदी की ज़िंदगी का मक़सद है। अत: यह मेरी आरज़ू है बल्कि शायद आरज़ू का लफ़्ज़ इस सिलसिला में दरुस्त न हो ये सिर्फ़ आरज़ू नहीं है बल्कि मेरा दृष्टिकोण यह है कि इस तरह होना चाहिए कि तमाम अहमदियों से ये ख़ुदा तआला का कम अज़ कम मुतालिबा है। चुनांचे एक अहमदी से ख़ुदा तआला के कम अज़ कम मुतालिबा के मेरी सोच के मुताबिक़ हर अहमदी को क़ुरआन-ए-करीम की अरबी ज़बान में तिलावत करने और इस से बरकत हासिल करने के काबिल चाहिए।"

"हर अहमदी को अपनी पूरी सलाहीयत की हद तक तर्जुमा के वास्ता से नहीं बल्कि बराह-ए-रस्त अरबी मतन से ख़ुदा के पैग़ाम (क़ुरआन-ए-करीम) को समझना चाहिए। गो तर्जुमा का निज़ाम ज़रूरी है। (मगर नागुज़ीर मजबूरी के तहत) लेकिन ये काफ़ी नहीं। हर किसी को इलम होना चाहिए कि इस तरह तर्जुमा क्यों किया जाता है। किसी और तरीक़ा से क्यों नहीं। इस लिए कि असल अरबी अलफ़ाज़ मुख़्तलिफ़

इमकानी मआनी के मुतहम्मिल होते हैं मगर मुतर्जिम को इन में से सिर्फ एक का इंतिख़ाब करना होता है। पस अगर कोई ख़ुद मुईन तौर पर अलफ़ाज़ के मआनी नहीं जानता तो वो तर्जुमा करने में कई लिहाज़ से ग़लतीयों का इर्तिकाब करेगा।

पस मैं यक़ीन रखता हूँ कि इस के साथ ज़ाती ताल्लुक़ ज़रूरी है क्योंकि हम वक़्त के लिहाज़ से एक अहम मुक़ाम यानी नई सदी के सिर पर खड़े हैं जो हमारे सामने है।"(ख़िताब शूरा)

आपने एक ख़ुतबा जुमा में क़ुरआन-ए-मजीद और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का इस्तिहज़ार करने वालों से कि: अपने रवैय्या को बदलो और अपने हदूद के अंदर रहो। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस-सलाम के ख़िलाफ़ बदज़बानी करने वालों को भी अपनी हरकतों से बाज़ आना चाहिए....अगर ये अपनी इस्लाह नहीं करते तो एक मुद्दत तक मोहलत देकर ख़ुदा अपने अज़ाब से उनको हलाक कर देता है।"

पस हम लोग ख़ुश-क़िस्मत हैं कि अल्लाह ने हमें वक़्त के इमाम की शनाख़्त की तौफ़ीक़ दी और अब उस वक़्त हमारे प्यारे इमाम हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अलख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के वह रूहपरवर ख़ुतबात जो MTA के ज़रीया हमें हासिल हो रहे हैं यह ही वह दौलत है जिस का ग़ैर लेने से इनकार कर रहे हैं और हम अफ़राद जमात माला-माल हो रहे हैं ये रुहानी दौलत तो क़ुरआनी उलूम की सही तफ़सीर है जो जमात अहमदिया हासिल कर रही है और इस का इनकार करने वाले महरूम हैं। ख़ुदा उन्हें भी इस की तौफ़ीक़ दे।

अल्लाह तआला ने क़ुरआन-ए-मजीद की हिफ़ाज़त का वाअदा फ़रमाया फिर आंहुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर दौराने हज ये आयत नाज़िल की اَلْيَوْمَ اَكْمَلْتُ لَكُمْ دِيْنَكُمْ وَاَتْمَمْتُ عَلَيْكُمْ نِعْمَتِيْ وَرَضِيْتُ لَكُمُ الْاِسْلَامَ دِيْنًا की बशारत दी। इस तरह क़ुरआन-ए-मजीद को अल्लाह ने इस दुनिया के लिए एक मुकम्मल लाह-ए-अमल और निज़ाम -ए-हयात के तौर पर पेश किया। फिर दीन इस्लाम की बक़ा के लिए हर सदी के सिर पर मुजद्दिद भेज कर इस दीन को दोबारा से ज़िंदा करता रहा है। फिर आख़िरी ज़माना के मुताल्लिक़ ख़बर दी कि :

"अगर ईमान सुरय्या सितारे के पास भी होगा तो उन (अहल फ़ारस) में से एक शख़्स उसे पालेगा।"(बुख़ारी किताबुत्तफ़सीर)

अत: अल्लाह तआला ने क़ुरआन-ए-करीम की महानता को क़ायम रखने के लिए जहां इस ज़माना के इमाम महदी अलैहिस्सलाम को चमत्कार दिए वहां आपकी वफ़ात के बाद ख़ुलफ़ाए अहमदियत ने भी क़ुरआनी उलूम की वो तफ़सीर बयान की और कर रहे हैं जिसका मुक़ाबला कोई नहीं कर सकता और आख़िर दुनिया को क़ुरआनी उलूम-ओ-तफ़सीर समझने के लिए इस चशमा से सेराब होना पड़ेगा।

सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को दीगर अदयान बातिला पर इस्लाम की बरतरी साबित करने के लिए अल्लाह तआला ने क़ुरआन-ए-मजीद के बेपनाह हक़ायक़-ओ-मआरिफ़ से इत्तिला दी और ऐसे अज़ीमुश्शान दलायल और बराहीन अता किए कि बड़े से बड़े अक़लमंद, आलम और साईंसदान इन दलायल का मुक़ाबला करने से आजिज़ आ गए। पस क़ुरआन-ए-करीम इलम-ओ-मार्फ़त से लबरेज़ दलायल का एक नापैदा कनार समुंद्र है। इस समुंद्र से ख़ुलफ़ाए अहमदियत ने भी अज़मत क़ुरआन के मुताल्लिक़ समय समय पर अपने ख़ुतबात में रोशनास किया है।

आख़िर में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की एक नज़्म से चंद अशआर पेश हैं:

जमाल-ओ-हुस्न क़ुरआँ नूर-ए-जान-ए-हर मुस्लमान है
क़मर है चांद औरों का हमारा चांद क़ुरआँ है नज़ीर
उस की नहीं जमती नज़र में फ़िक्र कर देखा भुला
क्योंकर ना हो यकता कलाम-ए-पाक रहमां है

★ ★ ★